সত্যমেব জয়তে

মেয়েক কাকেই

বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষা প্রবেশিকা

বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষা প্রবেশিকা

BISHNUPRIYA MANIPURI PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें

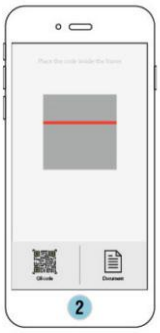

क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें

स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें

लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें

उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें

अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी

पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें

क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें

कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें

क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

মেয়েক কাকেই

বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষা প্রবেশিকা

बिष्णुप्रिया मणिपुरी भाषा प्रवेशिका

BISHNUPRIYA MANIPURI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

মেয়েক কাকেই
বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষা প্রবেশিকা
बिष्णुप्रिया मणिपुरी भाषा प्रवेशिका
BISHNUPRIYA MANIPURI PRIMER

A basal reader of Bishnupriya Manipuri alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors

Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Aleendra Brahma
Milan Subba

ISBN: 978-81-19411-59-7

First Edition: December, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Saravanan A S
Cover Photo: Madhu Mangal Sinha

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/ घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy

संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ভারত যুগযুগ ধরে বহুভাষী দেশ, দেশের বিভিন্ন অঞ্চলে বহু কথ্যভাষা রয়েছে। কথোপকথনে একাধিক ভাষা ব্যবহার করা দেশের একটি সাধারণ বৈশিষ্ট্য, এটি আমাদের একত্রে আবদ্ধ করে এবং ঐক্যবদ্ধ রাখে। জাতীয় শিক্ষানীতি (NEP) 2020 দৃঢ়ভাবে এই ধারণার উপর জোর দেয় যে, ভারতের বহুভাষিক প্রকৃতি একটি বিশাল সম্পদ যা দেশের সামাজিক-সাংস্কৃতিক, অর্থনৈতিক এবং শিক্ষাগত উন্নয়নের জন্য দক্ষতার সাথে ব্যবহার করা প্রয়োজন। এটি প্রতিটি স্তরে শিক্ষায় বহুভাষিকতার প্রচারের সুপারিশ করে যাতে শিক্ষার্থীরা তাদের নিজস্ব ভাষায় পড়াশুনা করার সুযোগ পায়। সমস্ত ভারতীয় ভাষায় শিক্ষণ ও শিখন উপকরণ তৈরি করণ এই

বহুভাষিক সম্পদকে বাড়িয়ে তুলবে এবং 'বিকশিত ভারত' এর রূপকল্পে আরও ভালো অবদান রাখবে। বলা হয়েছে NEP 2020 এর সাথে সামঞ্জস্য রেখে নবপর্যায়ের প্রাথমিক পাঠ্যপুস্তক বিকাশের জন্য একটি ব্যাপক ও অন্তর্ভুক্ত পদ্ধতির প্রয়োজন যা ভারতে প্রতিটি অঞ্চলের অন্যান্য ভাষাগত এবং সাংস্কৃতিক বৈশিষ্ট্যগুলিকে সম্বোধন করে। এই প্রাথমিক পাঠ্যপুস্তকগুলির উদ্দেশ্য হল পড়া ও লেখার ক্ষেত্রে শুধুমাত্র ভাষার দক্ষতা প্রদান করা নয় বরং প্রাথমিক পর্যায়ের শিক্ষার্থীদের সৃজনশীলতা এবং সমালোচনামূলক চিন্তাভাবনাকে উৎসাহিত করা। এটি একটি ভাষার বর্ণমালার হরফ এবং প্রতীক ও উচ্চারণ স্বীকৃতির চাবিকাঠি। প্রাথমিক পাঠ্যপুস্তকগুলি হরফের এক বা একাধিক পর্যায়ের সাথে শিশুদের পরিচয় করিয়ে দেয় যা হরফগুলির সংমিশ্রণের মাধ্যমে তৈরি করা হয়, যেমন শব্দের প্রাথমিক, মধ্যবর্তী ও চূড়ান্ত অবস্থানের হরফ। সেইসাথে এটি এমন উদাহরণ তৈরি করে যা পরবর্তিতে প্রবর্তিত হরফ লেখার অনুশীলনকে সহজতর করবে এবং ছড়াগুলি শিক্ষার্থীদের ভাষা বিকাশ এবং জ্ঞানীয় দক্ষতায় সাহায্য করবে।

দিসংবর 2024
মৈসূরু

প্রো. শৈলেন্দ্র মোহন
নিদেশক
ভারতীয় ভাষা সংস্থান, মৈসূরু

CIIL-NCERT Primer Series: Bishnupriya Manipuri Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Co-Coordinator

Milan Subba, Resource Person (Teaching) in Nepali, North Eastern Regional Language Centre (NERLC), (CIIL), Guwahati

Resource Persons

Madhu Mangal Sinha, PhD Research Scholar, CGT Purba Hurua Rasamoy High School & Academic Counsellor, IGNOU, North Tripura, Tripura

Pratim Kumar Sinha, PGT Rtd. Teacher, Unokuti, Tripura

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, NERLC, (CIIL), Guwahati
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষা শিক্ষার বই কিভাবে পড়াবেন

নতুন জাতীয় শিক্ষানীতি 2020 এবং জাতীয় পাঠ্যক্রম কাঠামো 2022-এর অধীনে, ৩ থেকে ৮ বছরের শিশুদের জন্য তাদের মাতৃভাষা,স্থানীয় ভাষা এবং আঞ্চলিক ভাষায় পড়ানো হবে। কেন্দ্রীয় সরকার 3 থেকে 5 বছরের প্রাক-প্রাথমিক শিক্ষার্থীদের মৌলিক সাক্ষরতা এবং I-II শ্রেণীতে শিক্ষার্থীদের প্রাথমিক সাক্ষরতা প্রদানের জন্য সুবিধার ব্যবস্থা করেছে। তাই, পাঠ্যপুস্তকটি বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষায় লেখা, কবিতা ও শব্দের মাধ্যমে শিক্ষার্থীদের মৌখিক ভাষার বিকাশের উপর জোর দেওয়া হয়েছে। পাঠ্যপুস্তকে বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষার বর্ণমালার পরিচয় দেওয়া হয়েছে এবং ছবির সাহায্যে শব্দের পরিচয় দেওয়ার চেষ্টা করা হয়েছে। জাতীয় পাঠ্যক্রম কাঠামো 2022, অনুসারে শিক্ষার্থীরা তাদের মাতৃভাষায় পড়তে এবং লিখতে শেখার সময় বাংলা পড়তে এবং লিখতে শিখতে পারে তার উপরও গুরুত্ব দেওয়া হয়েছে। অতএব, বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী বর্ণমালার পাঠ্যপুস্তকে শিশুর মাতৃভাষার পাশাপাশি বাংলা শব্দও অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে। এই শব্দগুলো শিশুর চারপাশের পরিচিত পরিবেশ থেকে সংগ্রহ করে পাঠ্যপুস্তকে অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে। বহুভাষিক শিক্ষার মূল লক্ষ্য হল-শিক্ষার্থীদের তাদের মাতৃভাষায় পঠন ও লেখার দক্ষতা উন্নত করা। পাঠ্যপুস্তকটি বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী এবং বাংলা ভাষায় উপস্থাপিত করে শিক্ষার্থীদের জন্য ডিজাইন করা হয়েছে। পাঠ্যপুস্তকের মূল উদ্দেশ্য, কবিতা ও ছবির মাধ্যমে শিশুদের বুদ্ধিবৃত্তিক ও মানসিক বিকাশ ঘটানো। দ্বিতীয়ত, ভাষা শিক্ষার জন্য শিক্ষার্থীদের বর্ণমালার পাশাপাশি শব্দগুলোর সাথেও পরিচয় করিয়ে দেওয়া।

পাঠ্যপুস্তকটি কীভাবে ব্যবহার করবেন তা নীচে দেওয়া হল:

শব্দ পরিচিতি: শিক্ষার্থীরা পাঠ্যপুস্তকে ছবি দেখে বস্তুর নাম বলবে। শিক্ষকরা শিক্ষার্থীকে প্রশ্ন করবেন যে বস্তুটির নাম কী শব্দ দিয়ে শুরু হয়। শিক্ষার্থীরা ছবিটি দেখার পর বুঝতে পারবে। যেমন-'আত্তি' ছবিটি দেখে এটি 'আ' শব্দ দিয়ে শুরু হয়েছে।

বর্ণমালার পরিচিতি: শিক্ষকরা 'ছ' অক্ষরটিকে চিহ্নিত করার জন্য শিক্ষার্থীদের প্রশ্ন করবেন, যেমন - 'ছ' অক্ষরটি দেখতে কেমন। পাঠ্যপুস্তকে দেওয়া কিছু শব্দ থেকে 'ছ' অক্ষরটি বের করতে বলুন। শিক্ষার্থীরা তিন বা চারটি শব্দ থেকে 'ছ' অক্ষরের ধ্বনি উচ্চারণ করবে এবং 'ছ' অক্ষরটি লেখার অভ্যাস করবে।

পড়া: শিক্ষার্থীরা ছবি দেখে তাদের নিজস্ব ভাষায় কথা বলার চেষ্টা করবে এবং শব্দের নাম বাম থেকে ডানে আঙুল দেখিয়ে 'চউল' শব্দটি বলবে এবং পড়বে। শিক্ষার্থীরা 'চ' দিয়ে শুরু হওয়া অন্যান্য শব্দ পড়ে 'চ' অক্ষরটি খুঁজে বের করতে এবং বলতে শিখবে। শিক্ষক প্রাথমিক, মধ্য এবং চূড়ান্ত অবস্থানে 'চ' শব্দের ব্যবহার সম্পর্কে শিক্ষার্থীদের বলবেন।

লেখা: শিক্ষকরা প্রথমে শিক্ষার্থীদের 'চউল' শব্দের 'চ' অক্ষরটি লিখতে শেখাতে হবে এবং তাদের দেখাতে হবে কিভাবে কলম ধরে বাম থেকে ডানে লিখতে হয়। তারপর শিশুরা নিজেরাই বর্ণমালা দেখে 'ক' লিখতে অভ্যাস করবে এবং লেখার সময় শিক্ষকরা তাদের সহায়তা করবেন।

শিশুদের জন্য তাদের মাতৃভাষার পাশাপাশি বাংলায় একটি সম্পূর্ণ বিষ্ণুপ্রিয়া মণিপুরী ভাষার শিক্ষার বই প্রস্তুত করা হয়েছে।

তলর চিন এতা চেয়া দিয়াছি দাগোতাত খাস ইকরো :

উবা চিন :

পাথারি চিন :

কেতিরা ১ : 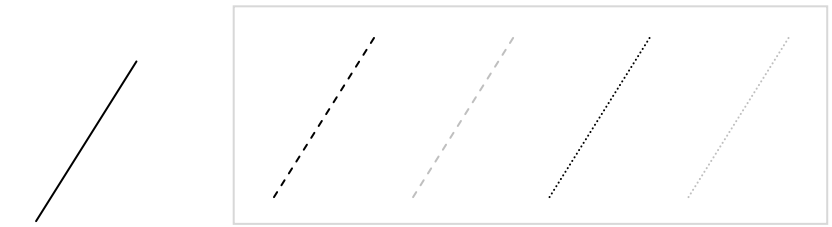

কেতিরা ২ : 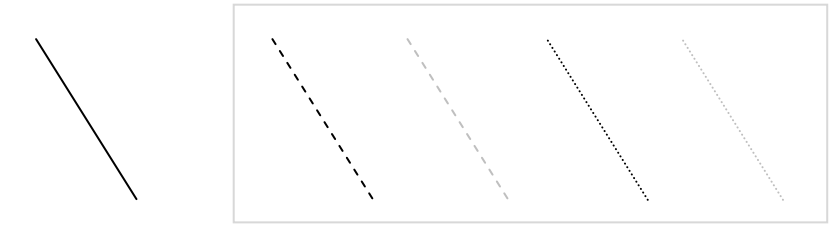

ককারা চিন ১ : 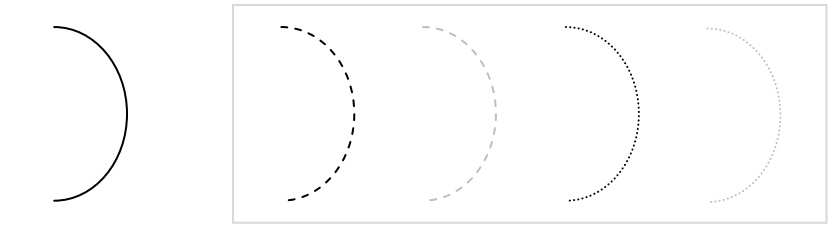

ককারা চিন ২ : 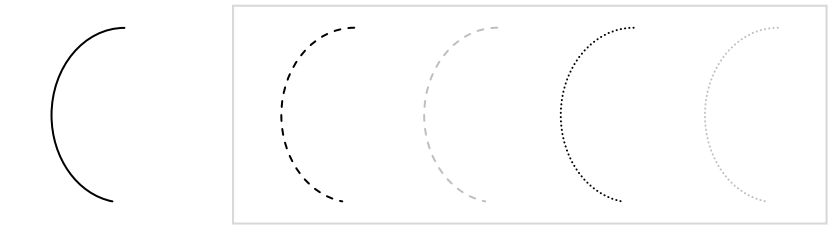

চেইক : বাগা দিতই অজা/অজি গিরক/গিথানকে যে সারেঔ শৌরে পেনসিলগো ধরানি হিকাদেনা বারো দিয়াছি দাগঅতার গজে ইকরানি হিকাদেনা লাগতই।

মেয়েক

(অক্ষর)

স্বরবর্ণ

অ আ ই ঈ

উ ঊ ঋ

এ ঐ ও ঔ

ব্যঞ্জনবর্ণ

ক	খ	গ	ঘ	ঙ
চ	ছ	জ	ঝ	ঞ
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ
ত	থ	দ	ধ	ন
প	ফ	ব	ভ	ম
	য	র	ল	
শ	ষ	স	হ	
	ড়	ঢ়	য়	
ৎ	ং	ঃ	ঁ	

অ

অরিং

হরিণ

অরিং আগ নাচের বনে
অজাই ডাখের খনে খনে।
অজগরগ আহের উরে
অটফুলগ ইচের মুরে।।

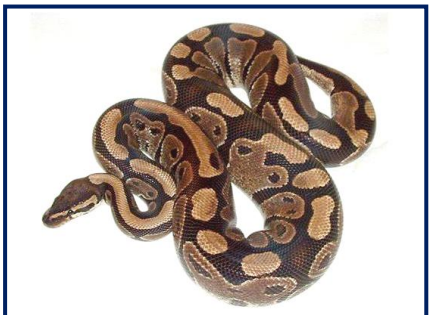

অজা	অজগর	অটফুল
শিক্ষক	অজগর	জবা

অ অ অ

আ

আন্তি

হাতি

আন্তির কান তুক্তার পাতা
আনদি এতা বিয়ানে খাতা।
আনখ আহিত অজা বছে
আঙালাগি রইদে দেছে।।

আন্দি

হলুদ

আনখ

চশমা

আঙালা

আমলকি

আ আ আ

ই

ইমা

মা

ইমায় মরে দেইরি চুমা
ইকনি এগ দেইনে হমা।
লেইরাঙ হানাত জ্বী লাগেছে
খলেইত বপায় মাছ বরাছে।।

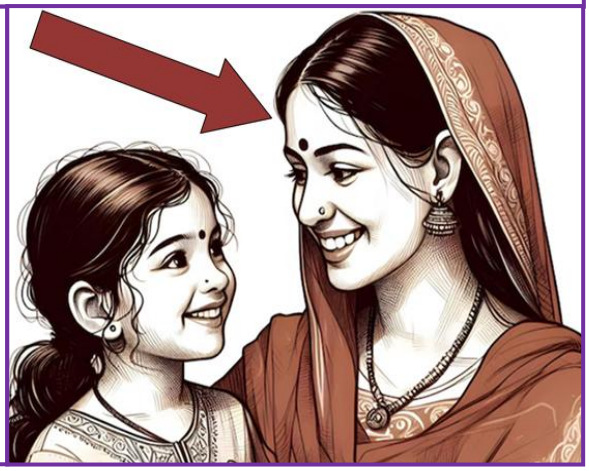

ইকনি

কলম

লেইরাং

উনুন

খলেই

খালাই

ই ই ই

ঈ

ঈশালপা

গায়ক

ঈশালপাগই দেরতা এলা
ঈঙাল এহান রাশিৎদলা।
মঈপঙ রুহের খুরাই উরে
চেঙি দিরি ইচেই মুরে।।

ঈঙাল

আলো

মঈপঙ

শঙ্খ

চেঙঈ

চাল ধুয়া জল

ঈ ঈ ঈ

উ

উমেই

হাত পাখা

উমেই থনা গরম কালে
উসই পারাং বাহার তলে।
উকেই দের রমন খুরা
লেহাউ ফুল জুরাত খুয়া।।

উসই

বাঁশ কড়ুল

উকেই

মই

লেহাউ

চম্পাফুল

উ উ উ

ঊ

ঊটং

বাঁশের চৌঙ

ঊটং গুললি হাবির গরে
ঊরি দরের ঊরির জারে।
নিঊনি দারার চহার চাঙে
হঊ রাদিরি ইমায় খাঙে।।

ঊরি

সিম

নিঊনি

বাটালি

হঊ

তরকারী

ঊ ঊ ঊ

ঋ

ঋষি

ঋষি

ঋষির মুরে জটা থার
ছয়হান ঋতু বসরে পার।

ঋ	ঋ	ঋ	
ঋ	ঋ	ঋ	
ঋ	ঋ	ঋ	

এ

এইরুক

প্রসাদ থালি

এইরুক এতা দৌওর কাজে
এলাচি এতা ক্ষীরে
এলকুনিলো ধানগি ঠেলা
এইরা তাংখা লেরিকে।

এলকুনি

নাড়ার লাঠি

এলাচি

এলাচ

এইরাতাঙখা

পানবাটা

এ এ এ

ঐ

ঐরাবত

হাতি

ঐরাবতগো আহের অরে
শৌগো কাঁদের ডরে ডরে।

ঐ	ঐ	ঐ	
ঐ	ঐ	ঐ	
ঐ	ঐ	ঐ	

ও

ওয়াঙ

ময়ূর

ওয়াং উগো নাচের বনে
ওলকপিগো দেনে মোরে,
উলনহান দেখিয়া ওয়াক
হমাছে গোরু কলে।

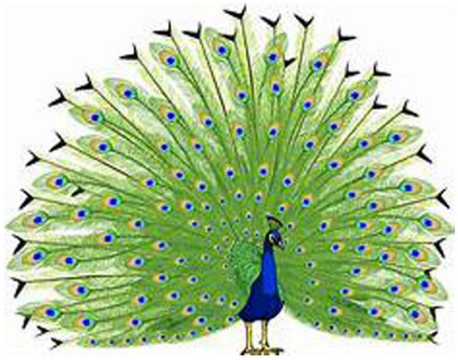

ওলকপি

ওলকপি

ওলন

ওলান

ওয়াক

বনবিড়াল

ও ও ও

ঔ

ঔহাঙ

প্রজ্বলিত

লেম লাগা ঔহাঙে
ফঔদক আহিল ঔদ্ভিদে
ঔজস সালপা মোষগ
নাং পালপা হাতগ।

ঔদ্ভিদ

উদ্ভিদ

ঔজস

বলশালী

ফঔদক

ফল

ঔ ঔ ঔ

ক

কদাল

কোদাল

কৌয়া অগই কা কা রুহের
কদাল আহাত বহিয়া
কাকাড়া বাবু গাতে হমার
ফেন ধনুক দেখিয়া।

কওয়া

কাক

কাকাড়া

কাঁকড়া

ফেনধনুক

রামধনু

ক ক ক

খ

খড়ম

কাঠের পাদুকা

খড়ম জাঙে আটের ঋষি
খৌ আগ লটকিয়া,
খংকারু হান পিদিরি সৌগৈ
আতে খারু রুহিয়া।

খৌ

থলে

খংকারু

হাফপ্যান্ট

খারৌ

চুড়ি

খ খ খ

গ

গদা

গদা

আতে গদা আহিল গঙিয়া
গংগারাগই চার,
ঘরগ বুজে মানুর মেলা
হারৌর জুয়ার কার।

গঙিয়া

ট্যাংরা মাছ

গঙগারা

ঝিঁঝিঁপোকা

ঘরগ

বাড়ী

গ

গ

গ

ঘ

ঘড়া

ঘোড়া

ঘড়া দাবদেব ঘন্টা বাজের
ঘাগট জাঙে ঘুঙুর রুহের।

ঘন্টা

ঘন্টা

ঘাগট

ঘাগট

ঘুঙুর

ঘুঙুর

ঘ ঘ ঘ

ঙ

ঙাচুপি

নদীর ডলফিন

ঙাচুপি নাথার ঙাকাম পানিত
থাইলে তাতে মরের,
মেঙসেল চেয়া বেইলঙ সিরলে
কাটা আতে গিঠের।

ঙাকম

ছোটপুকুর

মেঙসেল

আয়না

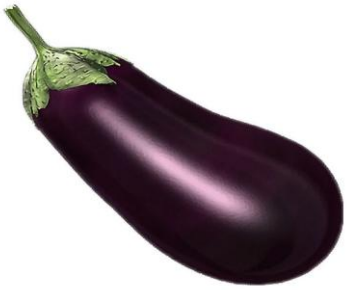

বেইনঙ

বেগুন

ঙ ঙ ঙ

চ

চউল

চাল

চউল দইরি ইমাজেলায়
চিনা জুরাত থয়া,
চেনচয়াগৈ ঘরগ বাদের
বকচা মুরে দিয়া।

চিনা

চিরুনি

চেনচরা

চড়ুইপাখি

বকচা

বোঝা

চ চ চ

ছ

ছক্কা

ছক্কা

ছক্কা খেলাত বছে ইচে
ছাকুনি আতে দরিয়া,
পিছুম উগি করল বেকা
বৈচা মাছ দেহিয়া।

ছাকুনি

ছাঁকনি

পিছুম

ভ্রু

মাছ

মাছ

ছ ছ ছ

জ

জাঙ

পা

জাঙ হাননো জাম্বুরাগত
জাঙর বুকুর দিয়া
জিন জিনি দেখের দিনে
জাহাজ গত চড়িয়া।

জামবুরা

বাতাপি

জিনজিনি

জোনাকি

জাহাজ

জাহাজ

জ

জ

জ

ঝ

ঝরঝরি

ঝর্ণা

ঝরঝরিহার ইংপা পানি
ঘরর গজে টিনর ছানি।

ঝুটি

চুলের ঝুঁটি

ঝংকার

মরিচা

ঝ

ঝ

ঝ

ঝ

ঝ

ঝ

ঞ

মিঞ

বন্ধু

মিঞগোতে কনাক কনাই পাত্রগোত বরা মানাই।

ঞ	ঞ	ঞ	
ঞ	ঞ	ঞ	
ঞ	ঞ	ঞ	

ট

টেঙারা

পাহাড়

টালা মুরে টেঙারাত
সালোছেতা বাটটি
ফাটক আহান আঙছেতা
চারিবারা টাটটি।

টালা

পাতার ছাতা

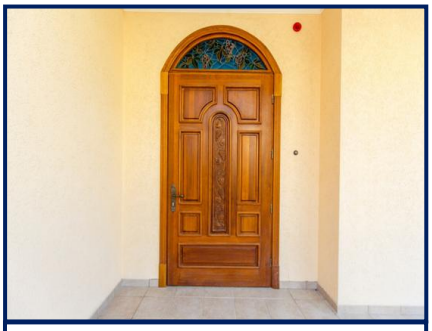

ফাটক

দরজা

টাটটি

বেড়া

ট ট ট

ঠ

ঠালি

কাঠের গামলা

রুকলো হঙর আমার ঠালি
ঠপে নেইগা গবর
পিঠার হুয়াত বিরন পিঠা
কাঠি পিদলে পহর।

ঠপ

গোবর ফেলার পাত্র

পিঠা

পিঠা

কাঠি

মালা

ঠ ঠ ঠ

ড

ডাকুলা

পুংবাদক

ডাকুলা মণি নাং ফিটিছে
ডাক বারিয়া ফাংনাত
ডুম্বুরুগো ডামহাৎ থয়া
বিসারারতা নাক্ষাত।

ডাম

চাটাই

ডুম্বুরুগো

ডমরু

বেরেণ্ডি

ঢেঁড়স

ড ড ড

ঢ

ঢোল

ঢোল

ঢোল বারিরি ঢলকিএ

ঢনা মাছ আছে ঢলে।

ঢনা

শুকনো মাছ

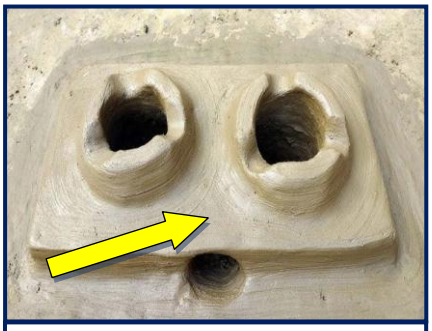

ঢল

চুলার পাড়

ঢলকি

মোটা গাল

ঢ

ঢ

ঢ

ণ

ণাম্ফা

গোলা ঘরের তাক

ণাম্ফাহাত আছে ণালিকগ
মেংসেলে চাগা ণেহগ।

ণালিক

চোঙ

ণেহ

চেহারা

ণ

ণ

ণ

ণ

ণ

ত

তাপু

বেতের ঝুড়ি

তাপু এগো বেতলো হঙর
তেনুর ঠট রাঙা
পাতিলাগত জিওল জিঙা
চাকাম মাঝে খন্তা।

তেনুওয়া

তোতা

পাতিলা

মাটির হাঁড়ি

খনতা

খুন্তি

ত ত ত

থ

থাম্পাল

পদ্ম

থাম্পাল এগো কতিরৌ হবা
থাপাক থাপাক মালয়া
থংবেই দিরি আমার ইমা
জারর কান্থা বেলেয়া।

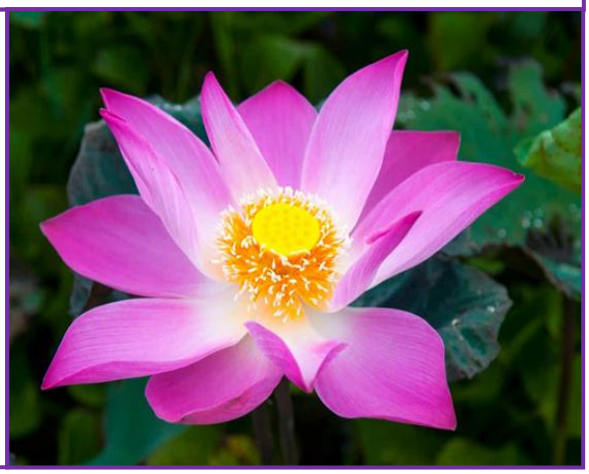

থাপাক

বাহুবন্ধনী

থঙবেই

প্রদীপ

কানথা

লেপ

থ থ থ

দ

দলেই

পালকি

দলেই হানাত যারগা বাদর
লগ ধরেছি দরমাছি
মুদা ফাটিয়া রকত পরের
লাগাদেইনে পাতা গাছি।

দরমাছি

মাছি

বাদর

বানর

মুদা

পায়ের গোড়ালি

দ দ দ

ধ

ধনুক

ধনুক

ধনুক হানে দুনিয়া হুতা
ধতুরা ফুল মালছে
বাধাকপি চাবিয়া নিতাই
খৌনাত গাঠি লাগেছে।

ধতুরা

ধুতরা

বাধাকপি

বাঁধাকপি

ধূপ

ধূনা

ধ

ধ

ধ

ন

নারিকল

নারকেল

নৌগো বুজিয়া নেরগা ইপু
নারিকলর লাড়ু
নেন্নাম দিয়া সক করানি
ডাইলে দিয়া হেইনু।

নৌ

নৌকা

নেন্নাম

নেন্নাম পাতা

হেইনু

আম

ন ন ন

প

পঙতল

পেয়ারা

পঙতল ছিরিরি
কাঁচা মজা বাছিরি
পিরার গজে থুয়াছি ফল
পেপুরাই বুজিছি।

পিরা

পিঁড়ি

পেপুড়া

পিঁপড়া

ডেপ

শাপলা

প প প

ফ

ফরিং

ফড়িং

ফিটাৎ বসে অজা ফড়িং
সোফাহানাৎ লেইমা
ফিরাল কুপিক আহো তোরা
আহের অরে এইগা।

ফিরাল

পতাকা

সোফা

সোফা সেট

ফিটা

আসন

ফ ফ ফ

ব

বল্ডা

ষাঁড়

বল্ডা উগো রহের বেজান
বাঘর আতে পড়িয়া
কবি চেরৌর রং কালিরা
কালা পানিৎ বুড়িয়া।

বাঘ

বাঘ

কবিচেরৌ

শালিক

বুবি

বুবি ফল

ব ব ব

ভ

ভল্লুক

ভল্লুক

ভল্লুক ভায়া, ভ্রমরা ভায়া
কোরাং যারাইগাতা,
যারাংগা আমি ভাঙগি আনাত
আঠুম্পা কহা তিতা।

ভাত

ভাত

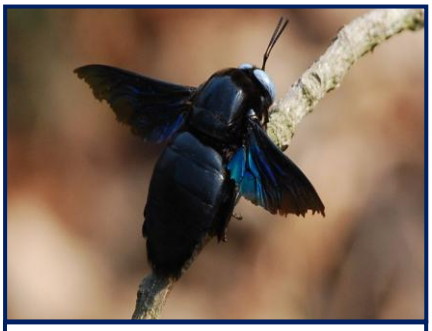

ভ্রমরা

ভোমরা

ভাঙগি

বাঙ্গি

ব ব ব

ম

মাংকারা

মিষ্টি আলু

মাংকারাগি খেয়া মইষগো
ডুম্বা অছে পেটগো
মানাপরম দেখলে পরে
কাঁদের আমার শৌগো।

মইষ

মহিষ

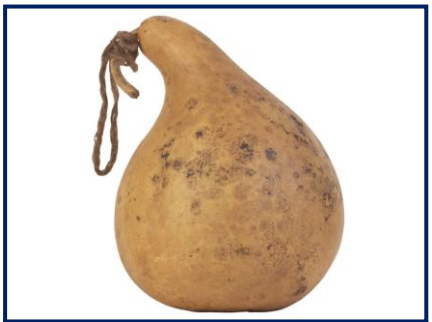

ডুম্বা

শাঁস ছাড়া লাউ

মানাপরম

টিকটিকি

ম ম ম

য

যতর

চড়কা

বহিছেতা যোগাসনে
মুঙে যতর তেরেঙ
তরজার বেরর ভিতরে
যোগিরভাতর পারেঙ।

যোগাসন

যোগাসন

যোগিরভাত

ভুট্টা

য

য

য

য

য

য

র

রকতচুহুনি

গিরগিটি

রকতচুহুনির গারগো রাঙা
রকত পিনার সালে,
পারন দরি পাতগা গিয়া
খং নাইলে বিলে।

রাঙা	পারন	দরি
লাল	পারন	চাঁই

র র র

ল

লারু

লাড্ডু

জারর পরে লাক্ষেই উরো
ইবাইতা হারু
তসিলা বুজে তিলুয়া আনো
খেয়া খেয়া লারু।

লাক্ষেই

চাদর

তিলুয়া

তিলুয়া

তসিলা

তসলা

ল ল ল

শ

শলেই

দিয়াশলাই

শলেইগো উদাল লাগা
মাছ পুড় শিংলতে।
শিংগা রৌ সাধুর থতাত
শিক্কা ঔতা বনেদে।

শিংলত

শলা

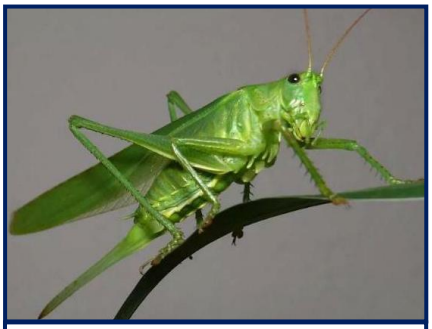

শিক্কা

ঘাস ফড়িং

শিংগা

শিঙ্গা

শ

শ

শ

স

সেনারেইই

গাঁদাফুল

সেনারেইগো কানর চিপাৎ
সেকপি বহেছি গাছর আগাৎ।
ঠেসকুন্ডাগই দেরতা এলা
সেন্ডিওল উতা থৌয়ে বেলা।

সেকপি

বাদুর

ঠেসকুণ্ডা

ফিঙেপাখি

সেণ্ডিওল

মাশরুম

স স স

হ

হেইনো

আম

খলকরতে পহুরিরমা
হামুক হুদা পেইলু
তাল করতেগা হরপ আগো
কহার মাঝে পড়লু।

হামুক

শামুক

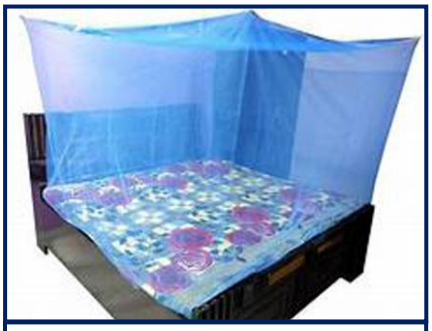

মহুরি

মশারি

কহা

কুয়া

হ হ হ

ড়

গাড়ী

গাড়ী

গাড়ির মাঝে হাগর গাড়ি
গরুড়র গজে হরি,
ঘড়ির কাম সময় দেনা
বাদং বুল্লে দড়ি।

গরুড়	ঘড়ি	দড়ি
গরুড়	ঘড়ি	রশি

ড় ড় ড়

ঢ়

আঢ়ক

শালি ধান

আঢ়ক ধানর বাড়লে ক্ষেতি
লপুক বুজা মুঠি
আমার আপই মাড়া বুলার
ধরিয়া কালা লাঠি।

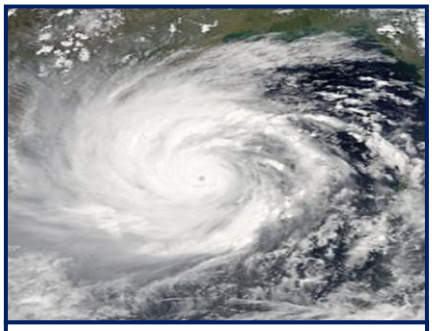

ডঙঢ়

নদীর জায়গা বিশেষ

গুঢ়

গুড়

ঢ়

ঢ়

ঢ়

ঢ়

ঢ়

য়

য়াংকেল

মাছ ধরার জাল

য়াংকেল বাহিয়া মাছ ধরিরি
সেনাতম্বী পিহি,
চিনুনিগই হাগহাত ফুরদিয়া
রুহের চিহি চিহি।

য়াথিল

দাঁত মাজন

কয়েত

পাগড়ী

য়াহি

হাতির দাঁত

য় য় য়

ৎ

মাহুৎ

মাহুত

ৎ গো তেরা ইছে
পালই ডেমগোর দেখি।
গাঠি দিয়া বাধতারাতা
শৌয়ে আতে রাখী।।

লেইপৎ

পূজার সামগ্রী

চামবুৎ

সিদ্ধ সবজী

ৎ

ৎ

ৎ

ৎ

ং

মাংকেই

তেঁতুল

চখা মাংকেই পানির খং
আতে আংঠি কানে রিং।

আংঠি

আংটি

খং

নালা

কানর রিং

কানের দুল

ঃ

নমঃ

নমস্কার

ঃ বিন্ধু অগি

আগর গজে আগো।

গনিয়া চেইলে পারাং আমি

বিন্ধু ইছে দুগো।।

ঃ ঃ ঃ

ঃ ঃ ঃ

ঃ ঃ ঃ

ঁ

চাঁদ

চাঁদ

চাঁদ বুল্লে জোলাকহান
চাঁন্দুয়াতে ফুতিহান।

স্বরবর্ণ	স্বরচিন	উদাহরণ	ছবি
অ	◌	ঘর	
আ	◌া	আত	
ই	◌ি	পিঠা	
ঈ	◌ী	মুখী	
উ	◌ু	আলু	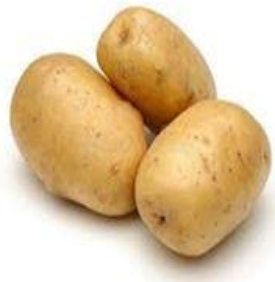

স্বরবর্ণ	স্বরচিন	উদাহরণ	ছবি
ঊ	ূ	ধূপ	
ঋ	ৃ	ঋষি	
এ	ে	রেল	
ঐ	ৈ	দৈ	
ও	ো	ঢোল	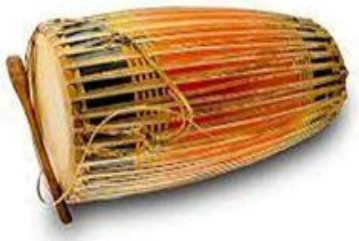

স্বরবর্ণ	স্বরচিন	উদাহরণ	ছবি
ঔ	ৌ	থৌ	

হাতো গণিক

১	এক		1
২	দুই		2
৩	তিন		3
৪	চারি		4
৫	পাঁচ		5
৬	ছয়		6
৭	সাত		7
৮	আট		8
৯	নয়		9
১০	দশ		10

১১	এগার		11
১২	বারো		12
১৩	তেরো		13
১৪	চৌদ্দ		14
১৫	পনের		15
১৬	ষোল		16
১৭	সতের		17
১৮	আঠারো		18
১৯	উনিশ		19
২০	কুড়ি		20

তলে দিয়াছি সংখ্যা অতা লিখো :				
১	১	১	১	
২	২	২	২	
৩	৩	৩	৩	
৪	৪	৪	৪	
৫	৫	৫	৫	
৬	৬	৬	৬	
৭	৭	৭	৭	
৮	৮	৮	৮	
৯	৯	৯	৯	
১০	১০	১০	১০	

১১	১১	১১	১১	
১২	১২	১২	১২	
১৩	১৩	১৩	১৩	
১৪	১৪	১৪	১৪	
১৫	১৫	১৫	১৫	
১৬	১৬	১৬	১৬	
১৭	১৭	১৭	১৭	
১৮	১৮	১৮	১৮	
১৯	১৯	১৯	১৯	
২০	২০	২০	২০	

বাংলা বর্ণমালা

স্বরবর্ণ

অ আ ই ঈ উ ঊ

ঋ এ ঐ ও ঔ

ব্যঞ্জনবর্ণ

ক	খ	গ	ঘ	ঙ
চ	ছ	জ	ঝ	ঞ
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ
ত	থ	দ	ধ	ন
প	ফ	ব	ভ	ম
য	র	ল	ব	শ
ষ	স	হ	ড়	ঢ়
য়	ৎ	ং	ঃ	ঁ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAON	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHALE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PŪ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANCOWRY (MÖÜT)	104	TELUGU

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (18)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI	109	HINDI	113	PAITE	117	SINDHI	121	ZEME (ZEMI)
106	CHOKRI	110	KASHMIRI	114	SANGTAM	118	THADOU-KUKI	122	ZOU
107	GANGTE	111	KOKBOROK (TRIPURI)	115	SANSKRIT	119	URDU		
108	GONDI-TELUGU	112	LAI (PAWI)	116	SANTALI (JHARKHAND)	120	VAIPHEI		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in